Topic- uttar Vaidik ke social.

Dr. Preeti Ranjan
Assistant professor
H.D Jain College (Ara)

B.A Part - I

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(1)

समाज

समाज का आधार रक्त संबंध था। समाज की महत्वपूर्ण इकाई कुल था। चतुर्वर्ण व्यवस्था स्थापित हो गई। चारों वर्णों के बीच भेद उत्पन्न होने लगा। चारो वर्णों के लिए चार शब्द आए – ब्राह्मण के लिए 'ऐहि', क्षत्रिय के लिए 'आगच्छ', वैश्य के लिए 'आद्रव' और शूद्र के लिए 'आधाव'। शूद्र को छोड़कर अन्य को द्विज की प्रास्थिति प्राप्त हुई। यज्ञोपवीत धारण करने के बाद दुबारा जन्म होता था। तैतरीय ब्राह्मण के अनुसार ब्राह्मण सूत का, क्षत्रिय सन का, वैश्य ऊन का यज्ञोपवित धारण करते थे। ब्राह्मणों के उपनयन संस्कार बसन्त में, क्षत्रियों का ग्रीष्म में और वैश्यों का शीत ऋतु में होता।

ब्राह्मण

प्रारंभ में 16 पुरोहितों में ब्राह्मण भी एक पुरोहित था। ब्राह्मण को वैदिक ग्रंथों में अदायी (दान लेने वाला) और सोमपायी (घूमने वाला) कहा गया।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

क्षत्रिय शाब्दिक अर्थ - क्षेत्र पर अधिकार करने वाला। लौह के खोज से प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई (युद्धों के कारण) समाज की सुरक्षा का भार क्षत्रिय पर था। क्षत्रिय ब्राह्मण में प्रतिस्पर्धी देखते हैं। कुछ दार्शनिक राजा हुए- जनक, प्रवाहण, जावलि आदि।

वैश्य ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में चर्चा है। उत्तरवैदिक काल में इन्हें अनस्य बलिकृता कहा गया। उत्पादक व कर दाता थे। ये कृषक व पशुपालक थे।

शूद्र ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में पहली बार शूद्रों की चर्चा है। इन्हें तीनों वर्णों का सेवक (अनस्यप्रेस्य) कहा जाता था। मैत्रायणी संहिता में धनी शूद्रों का जिक्र है। छुआछूत की अवधारणा न थी अर्थात् स्थिति ठीक थी। रथकार को अनिथन उपनयन अधिकार था। बच्चे विधवा स्त्री व सन्यासी वर्ण व्यवस्था से बाहर थे।

गोत्र की अवधारणा पहली बार उत्तरवैदिक काल में आया। इसका शाब्दिक अर्थ गोधन हेतु स्थान है। बाद में गोत्र का अर्थ एक मूल पुरुष से उत्पन्न व्यक्ति कहा जाने लगा। प्रारंभ में गोत्र ब्राह्मणों हेतु था बाद क्षत्रिय व वैश्य को भी प्रदान किया गया। मौलिक रूप से सात गोत्र है - ~~काश~~ कश्यप, वशिष्ठ, भृगु, गौतम, भारद्वाज, अत्रि व विश्वामित्र, आठवां गोत्र अगस्त्य ऋषि का माना जाता है। वे अनार्यों के ऋषि माने जाते है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रथा मूल पुरुष से उत्पन्न व्यक्ति को मानकर मूल पुरुष के पूर्वजों को ध्यान में रखा जाने लगा। सपिंड, सगोत्र आदि शब्द अब आ गए। परिवार का मुखिया सर्वश्रेष्ठ होता था। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार आजीगर्त ने अपने पुत्र को 100 गायों के बदले दे दिया। विश्वामित्र द्वारा अपने 50 पुत्रों को घर से बाहर निकाल दिया गया।

नारी की स्थिति

स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आयी। सभा और समिति में उनके प्रवेश का अधिकार समाप्त हो गया। पुत्रों की तुलना में संपत्ति से वंचित कर दिया गया। ऐतरेय ब्राह्मण में लड़कों को परिवार का रक्षक और पुत्रियों को दुःख का कारण माना गया। मैत्रायणी संहिता में स्त्रियों की तुलना मदिरा एवं पासा से की गई है। बृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य और गार्गी की कथा है। याज्ञवल्क्य ने वाद-विवाद में गार्गी को डाँटकर चुप कर देते हैं। फिर भी सूत्र काल की तुलना में स्त्रियों की स्थिति की स्थिति अच्छी थी। मैत्रेयी और गार्गी विदुषी कन्याएँ थीं।

अथर्ववेद के अनुसार स्त्री के चार पति होते थे - (1) सोम 2) अग्नि 3) गंधर्व 4) वास्तविक पति। इसका सांकेतिक महत्व है अर्थात यह स्त्रियों के शारीरिक एवं सांस्कृतिक विकास की चार अवस्थायें हैं। बृहदारण्यक उपनिषद में विदुषी पुत्री प्राप्ति हेतु धार्मिक अनुष्ठान की व्यवस्था है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

विवाह

विवाह एक आवश्यक कर्तव्य था। अविवाहित व्यक्ति यज्ञ नहीं कर सकता था। पुरुषों में बहुविवाह था। हरिश्चन्द्र की 100 पत्नियाँ थी। विधवा विवाह का प्रचलन था। तैत्तरीय संहिता में विधवा के पुत्र को दधिसव्य कहा जाता था। इसी में आर्य पुरुष और शूद्र नारी के बीच विवाह का वर्णन है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ऋषि च्यवन और राजा शर्यात की पुत्री सुकन्या के बीच विवाह की चर्चा है। राजा की प्रधान रानी महिषी कहलाती थी। आहार व आमोद प्रमोद - इस काल में मांस भक्षण एवं सुरा पान को नीची निगाह से देखा जाता था। विभिन्न स्थानों पर शैलुश (अभिनेता) की चर्चा है। बड़े उत्सवों पर वीणा-गाथिन (वीणा बजाने वाले) उपस्थित थे। शततंतु सौ तन्तु का वाद्य यंत्र था।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner